

312.
Mānsakuti
yajña

अथ मन्सकुति
329 I

ARCHIVES

वीवजसत्वाय ॥ नमोऽग्निं कुरु विद्या न ॥ ॐ स्वस्त्युवाहाय हं रु द
॥ संखलं खनहाय ॥ ॐ स्वस्त्युवाहाय हं रु द ॥ ॐ
सदनी वजीरु व वजवन्धु ॥ वजनथिय ॥ ॥ ॐ वजसत्वा ॥ ॐ
नथिय ॥ कुरु सनयाय ॥ ॥ ॐ ॐ ममहा कुरु विद्याः पविता वज्र दवना
ः वृद्ध धर्मसंघ नमोः पृथ्वी विज्ञान दला गङ्गाः ऊजमानस्य सर्वविघ्न प्र
मन्यार्थं कुरु सुखसिखाहा ॥ ॥ लोकयात्र पूजा ॥ ॥ ॐ ॐ ह्याय सना
धिय नय स्वाहा ॥ ॐ यमाय प्रनाधिय नय स्वाहा ॥ ॐ वनू मय नागधिय

सुता वस्तु प्रार्थन्याम २

नय स्वाहा ॥ ॐ कुरु वनाय ऊकाधिय नय स्वाहा ॥ ॐ अग्नि नकाधिय नय स्वा
हा ॥ ॐ नेमृत्वा वाकसाधिय नय स्वाहा ॥ ॐ वायु वायवनाधिय नय स्वाहा
॥ ॐ ॐ ॐ मनाय रुताधिय नय स्वाहा ॥ पूजा मुनि ॥ ॥ ॐ ॐ सुनय नि
थे व अग्नि नकाधियारु वः यमाय प्रनाधिय नय स्वाहा ॥ नेमृत्वा वाकसाधिय
ः ॥ नागधिय वनू मनाजाः वायु वायवनाधियः नथा कुरु नार्थि ऊकाधि
य नय स्वाहा ॥ ॐ मनाधिय नमस्तु न ॥ ॥ अष्टगन्धादि ॥ समयायास ॥ ॥ धन
कायू मधन ॥ ऊजमानस्य मना कुरु सपाफिकामार्थ ॥ ॐ वृद्ध स्वाया मुस

वैष्णव नृजिनसूक्तः दशगारि समगाभाका कल्याणविना सकलजनप
पविशाम नृकार्थनावे पूजाः गुरुकुम्भानि विदधतु यजमानाश्च पूजागर्तुः कुरु मित्त
॥ ॥ धनसिमनयानयावक ॥ रुगाग्निनाशन ॥ ॐ सर्वपापविघ्निमात्मन
मिमेकवृः हं रुद्रस्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ दानपत्रं कुरुमानस्य यथाभाक् कुरुलसंघा
पकामार्थं ॥ स्वस्तिवाक् ॥ ॐ अग्निस्त्वापन हल २ स्या हं ॥ ० ॥ ॐ सद्य हल वज्र वा
जनश्राः ॥ ॥ धनश्चान ॥ कुरु हलिनाग्निमध्य पंका वज्रं यममात्रं वाः न इ प
त्रि वंका वंजाताग्निमगुल नृकाला रुवपीन वग्नूम क मूरवं वगुहं वाम

दलुक मगु वृध वं सद्य व वकं दाक मालाध वं पीनाम्य वारु वं यज्ञाय वी
तं जिनगुं जदाम कुरु ध वं श्री वज्र सत्वालं कुरु मं मोलिनं समयाग्नि विराद्यः
॥ ॥ ॐ कालस्य वमहात्म्य हृदय यद्य वस्तिगाः नस्माद्विध विन्यस य
नस्मरुप वमं ध वं ॥ ज्ञानशान्तिमयं कुरु संगाथास्तुतिमात्रं नृम कुरु हं न
जहानं ज्ञानाग्निशान्तिवृषकं ॥ ह्रस्वदहनिपापानि दीर्घमा कुरु यदोयनी ॥ आया
यामे प्र तो वापि विविधाद्या वग्ननगु ॥ नस्मदं यदमं शानं नृद्यानं वज्रदव
ना नानि मध्वस्तिनं पद्मं ॥ दद्यादिसदवगा ॥ यमवद्यार्क मध्वस्तुः वीजं ॐ

कावसमं नादविन्दुकलागीमं। वाधिरुताननलाधिवि॥ ॥ॐ॥ अथदिमहा
नदवर्षिहृदिउः सन्निदितावस्वाहा॥ ॐ॥ यन्ननरुताननिवितावाः॥ ॐ॥
आः दक्किं वाउमूजागणनेजाअनयाय॥ ॥ॐ॥ अग्नादिषादियवि
षाविषमहाप्रियदवाकवावाहनायह॥ ॐ॥ उः हं वं हंः समयस्त्वंसमय
मिति॥ ॥ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ गंखलंखनहाय॥ ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ वज्रनः
भिक्षान॥ ॥ॐ॥ अग्नेयवस्कावायअर्घ्यपुनिकुस्वाहा॥ मूर्ध्नि॥ ॐ॥ अग्ने
यवस्कावायपाशंपुनिकुस्वाहा॥ पादौ॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावायपादौ॥ ॐ॥

कुस्वाहा॥ वक्र॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावायआवमनंपुनिकुस्वाहा॥ सर्वगम॥
ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ ३॥ पञ्चगव्यनलयन॥ ॐ॥ यन्ननसमयाग्नि॥ ॥ॐ॥ सर्वग
मगमकायविष्मधनस्वाहा॥ कलगलंखनहाय॥ ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ पञ्च
गव्य॥ ॥ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥
अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥
अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥
॥ वज्रवक्रहं॥ ३॥ पञ्चगव्यनलयन॥ ॐ॥ यन्ननसमयाग्नि॥ ॥ॐ॥ सर्वग
मगमकायविष्मधनस्वाहा॥ कलगलंखनहाय॥ ॐ॥ वज्रवक्रहं॥ पञ्च
गव्य॥ ॥ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥
अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥
अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥ अग्नेयवस्कावाय॥ ॐ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निंदया ॥ ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ समिधा गन्धन ॥ ॐ ह्रीं गन्धय स्वाहा ॥ ३ घृणदा
य ॥ ॥ धनं ह्रीं स्वाहा दध्म घृणस थू दंदाय ॥ ॐ ह्रीं कृषि स्वाहा ॥ अर्क सि ॥ १ ॥
ॐ वज्रसामाय स्वाहा ॥ यलाग सि ॥ २ ॥ ॐ वज्रमीशाय स्वाहा ॥ वतिसि ॥ ३ ॥
ॐ वज्रवृद्धाय स्वाहा ॥ अपामार्ग सि ॥ ४ ॥ ॐ वज्रकूटमाय स्वाहा ॥ उत्त सि ॥ ५ ॥
ॐ वज्रयज्ञाय स्वाहा ॥ इंदु विल सि ॥ ६ ॥ ॐ वज्रगनिध्याय स्वाहा ॥ गनिक सि ॥ ७ ॥
१ ॥ ॐ वज्रवाधिवृक्षाय स्वाहा ॥ ८ ॥ वसुंगत सि ॥ ॥ ॐ वज्रवनाय स्वाहा ॥ पिना
क सि ॥ ९ ॥ ॐ वज्रवीजाय स्वाहा ॥ वसुत नू सि ॥ १० ॥ ॐ वज्रवनूमाय स्वाहा ॥

वनमसि॥११॥ वंजसहकावायस्वाहा॥अयसि॥१२॥ॐ सर्वपापप्रमनायः
स्वाहा॥वेकसि॥१३॥ॐ वंजकदहायस्वाहा॥कदसि॥१४॥ॐ वंजलित्
नकायस्वाहा॥लितानकसि॥१५॥ॐ सर्वनागप्रमनायस्वाहा॥नीकसि॥
१६॥ॐ सर्वगारुडायस्वाहा॥गंराविसि॥१७॥ॐ वंजमदनायस्वाहा॥मदकं
थसि॥१८॥ॐ वंजिअष्टादश॥ॐ अष्टनिहमवजायस्वाहा॥कूम॥॥ॐ वं
जायस्वाहा॥इवीक॥॥थनवीहि॥गधन॥ॐ सर्ववीदीजिंकुंजः॥ह
स्वाहा॥वीदिदाय॥॥ॐ सर्वपापदहनवजायस्वाहा॥हास३५ॐ वंज

नका॥ॐ वंजप्रमनायस्वाहा॥॥
पूषकस्वाहा॥आक॥ॐ वंजवंगायस्वाहा॥माथ॥ॐ वंजवीजायस्वा
हा॥स्वानया॥ॐ वंजवीजारवायस्वाहा॥पूर्वा॥ॐ वंजमहावगायस्वाहा॥
मास॥ॐ वंजमूममायस्वाहा॥मूम॥ॐ वंजमहाकावायस्वाहा॥स्वान॥ॐ वंज
क॥॥माषपि॥स्वाहा॥कृत॥ॐ अः॥हंसहमाषकस्वाहा॥यमा॥ॐ वंजः
अनव॥अः॥हंस्वाहा॥मुनि॥ॐ वंजकलावव॥अः॥हंस्वाहा॥कयमु॥ॐ
वंजनाजायस्वाहा॥नाय॥ॐ सर्वार्थसिद्धस्वाहा॥चयूका॥ॐ सर्वकुमप्रमना
यस्वाहा॥पडका॥ॐ सर्वसम्यदस्वाहा॥दधिगुड॥ॐ वंजप्रियंरुमायस्वाहा॥

धियं गुं ॥ ॐ आः ॥ दर्शनं रुद्राय स्वाहा ॥ धूतका वस ॥ ॐ आः ॥ गिरुद्राय स्वाहा ॥ गिरु
 रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ आः ॥ मधुगिरिनाय स्वाहा ॥ वयं वस ॥ ॐ आः ॥ हूं जूं जीं मूं ॥ लोमां पां जूं सूं
 वूं वीं हिं जीं स्वाहा ॥ स्वाधी दिदाय ३ ॥ ॥ अग्निमिमानयायुदहिगवर्त
 वामावर्तनदायक ॥ ॐ श्री वज्रसत्त्व आद्यादय २ हूं हूं न हूं न हूं हूं हूं स्वाहा ॥
 शुभाङ्गि ॥ दानपत्रं जजमानस्य भास्वत् कुरु लसं पापकामार्थं ४ श्री श्री ध
 र्माष्टाष्टागीश्वर रुद्रावकस्य वर्षवन्धनकलगावर्जनं कुरु लं रुद्रनिमित्तार्थं यथ
 माङ्गि ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ॐ अं नमो आदीप्यादीपविषाविषमहाशिये रुद्राय क वा २

माथ सासि खाहा

हा॥मकु॥नवकुवीहिदाय॥ ॥धन॥नगावंकनाचमनादिकंकुत्वाला
 कारुनक्षानाग्निरिवाद्यः कालाकालाग्नेयदाशुहृदिकमलवन्दासनाः
 पविमधुलाधिपनिवीरुनिषान्नविद्रवीरुपविभामनमधुलाधिपनिसमा
 दलयविवाद्यः स्नानसत्यचक्रकांकुमादिरिवाकृष्णवध्ववद्वासनायावी
 नमिवसमलसत्वसहकीकृत्वाअरिपिंयापाकगर्भयागार्धमनादिकंकुत्वा
 इद्रयात॥ ० ॥धनदयुलियाखानवाय॥आकर्षणयादंस्नानवाय॥पूजा
 लास्यामुनि॥नर्परा॥धनमूनमकुननवकद्वय॥हृदयमकुनखावीहि
 × गीतनिनित्राय ×

द्वय॥ ॥धनस्नानाह्निविय॥उंदानपकंऊऊमानस्य×स्वस्तिवायु×उंज
 ग्न्यादीपादियविषाविषमहाग्नियहवाकवावाहनायऊऊमानस्यमगुल
 स्नानाह्निगृह२हंरुद्रस्वाहा॥कुमथियक॥पूजालास्यामुनि॥नर्परा॥०
 ॥॥ॐनिस्नानाह्नि॥॥देवपूजा॥मकुह्निविय॥कालास्यापूजा
 पुनिष्ठादगसादगकर्ममानाह्नि॥धनदिगवलिविय॥काधवनिविय
 ॥०॥उंधनमीधनमीपर्थसनिप्रहंऊनिविधमनिकिंपूवृषसकलसा
 गवमुद्यम्वनगयाववमीसावंगुपाफदानपकंऊऊमानस्यगान्तिस्वस्त्यकु

धनकं नं कृता वनि ॥ उं कृत् ४ कृत् सर्वय कृता कृत् सत्त्व नयेन
वज्रवज्रघातवज्रधरस्त्रिभुवा व. अवलोकितस्त्रिभुवा गायपाफ. दानपत्रं ऊजमा
नस्य भक्तिस्त्रिभुवा सर्वदिग्विदि ॥ ४ ॥ ॥ कानपनिर्गय ॥ ॥ धनमहा व
निविय ॥ पूर्णं कपयय ॥ सिनकादय ॥ ॥ उं गगल २ विलाकि नरुजा वाजा
य ऊजमानस्य भक्तिं पूर्णं कृत् स्वाहा ॥ विलरुस नारी काल ॥ ॥ उं समाधि
लम् ॥ स्वाहा ॥ उं वी न ॥ ॥ उं वज्रगन्धस्वाहा ॥ पञ्चगंध ॥ उं सूर्यसूक्तं वल
कवनीय भक्तिं पूर्णं कृत् ॥ पञ्चत्वां उरुत्वा ॥ उं वज्रवाससं गां स्वाहा ॥ ऊज
मका ॥ उं धर्मधर्मनाज दद २ सर्वविघ्नाय भक्त्यर्थं भक्तिं कृत् ॥ वन्द्यु
॥ धनपुता हृति रंत्वा ॥ हृति विग्र ॥ ॥ उं पूजनाय ४ ॥ व

नर नृणां रव भूः स्वरावादि
तुङ्ग मङ्गा ४ द रुद्र सादी ॥

ॐ नमः शिवाय नमः

॥ ॐ वज्र धूप जाला ॥ धूं ॥ ॐ वज्र ला के जो स्वाहा ॥ दीप ॥ ॐ वज्र पिष्टिकाय
 स्वाहा ॥ पंचपक्व वां ॥ ॐ वज्र पूग नाम्नाय स्वाहा ॥ ग्वय ग्वान ॥ ॐ स्वस्वमूला
 य स्वाहा ॥ तु. गकि ॐ स्वध ॥ ॐ वज्र प्रिय नमो य स्वाहा ॥ प्रियंगु ॥ ॐ सर्व नागप
 ममनाय स्वाहा ॥ ऊरु उषधि ॥ ॥ ॐ वज्र वसंक नाय स्वाहा ॥ कसूम ॥ ॐ सर्व
 वलाक नाय स्वाहा ॥ मकपूष ॥ ॐ वज्र वीजाय स्वाहा ॥ सुमुख ॥ ॐ सर्व कर्मकति
 य स्वाहा ॥ नूक म ॥ ॐ ह व २ हं रुद्र स्वाहा ॥ सिद्धाय ॥ ॐ कनू २ सर्व कार्य सिद्धि म
 ददाय स्वाहा ॥ कंकूम ॥ ॐ मद २ सर्व इयानेन स्वाहा ॥ कर्पू ॥ ॐ वज्रि रुवाय

हं स्वाहा ॥ नक वन्दन ॥ ॐ ऊय २ हं रुद्र स्वाहा ॥ श्रीस्व मु ॥ ॐ हि वस्थपद स्वाहा ॥
 दासवकं ॥ ॐ सर्व वलपद स्वाहा ॥ नसावकं ॥ ॐ समय सर्व जालय स्वाहा ॥ अ
 गुनी ॥ ॐ मधु प्रिय स्वाहा ॥ जिमधू ॥ ॐ शिकुः २ सर्व मऊ स्वाहा ॥ शिकुः ॥ ॐ आः हं
 गिरुलाय स्वाहा ॥ गिरुला ॥ ॐ सर्व संयोग साधय स्वाहा ॥ गुरु वि ॥ ॐ कनिध नि
 सर्व कर्म सिद्धि कनू स्वाहा ॥ झाडू हल ॥ ॐ आद गन रुलाय स्वाहा ॥ धूकाल म
 ॐ वज्र वसु स्वाहा ॥ वयसि ॥ ॐ वजां पूष स्वाहा ॥ इर्वा कमु ॥ ॐ सर्व पूष रुला
 ॐ आः हं रुद्र स्वाहा ॥ सर्व ऊया ॥ ॐ शिकाय क वस दास मय स्वाहा ॥

व न ल ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्र सर्व कि ॥ ॐ स्वाहा ॥

ॐ क ॥ ॐ गो मधुना स्वाहा

ॐ क ॥ ॐ गो मधुना स्वाहा

ॐ वज्र सर्व कि ॥ ॐ स्वाहा ॥

ॐ वज्र सर्व कि ॥ ॐ स्वाहा ॥

ध्यानादुद्विगदक॥

1185

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ १ ॥ यत्कुरु निर्वृतिविधिं वन्यकामिनं गमत्तामदा नरु वयागवाहक
 ॥ समाधिनाम न समामविशतं वजाय मया द्वयमार्गदर्शिनो गम्यादिदं व
 त्ववप्रसीतं न न समानं न दाया कृत्स्नित्विहा ॥ ३ ॥ यवदुमभुलसिद्धि
 यसूर्यमभुलनथ ॥ सुनालयमभुलसिद्धि व सावाग्रवृद्धमभुलं आकाशमभु

१५ गीतमन्त्राणां लक्षणानि गीतमन्त्राणां लक्षणानि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

लयपू. नेव ऊनस्यमगुल. वसन्ति सर्वदवानां. वरुणकामनार्थकः दिग्भास्त्र
 स्त्रिकलेदिवां मर्गत्वात्तार्थसाधकं. ॐ दंपतीगंव वसं घनत्वं. लुगनसस्यनव
 हायाकृत्यस्त्रिस्त्रिहा ॥ ४ ॥ यदि कुरुदसुषु दवानिष्टुलुसर्वदा. वरुणामिभ्य
 यकृत्वा. मकृत्वास्त्रिद. मसह ॥ नन्दि क. ममहाकाल. कार्तिकयाग. मभ्यनः
 हेनवामाकृकादूर्ग. विद्यादवामहर्दिका ॥ वरुणामिमहावली. कालकर्मि
 महावला. मथाधन्यामहालाग. यप्रकृन्तुलीमवच ॥ ममिबूजापूष्यदन्ति. सर्व
 भूकभीचपिमीला. चकजदामहादवी. वृद्धाकिनिकनायकाः ॥ हावमीस न

प्रतापकथागर

स्वमीदवी. लक्ष्मीसिद्धन्वमीसूजा. ऊऊमानस्यममसर्वसत्त्वानां वरुणायाम
 कामार्थ. सर्वदवरयः स्त्रिस्त्रिहा ॥ ५ ॥ श्रीवृद्धधर्मसंघादि. रुगवनः म
 कृमनि. वज्रमवाधिसत्त्वादिन. कामनार्थसर्वमृषिभा. श्रीलयभूतृपक
 ग. कुरुमिजिद. मस्त्रिगा. वादमदोवपयकृ. स्त्रिगादवाजिनागनाः ॥ नसर्व
 दवलाकाय. स्त्रि कुरुलकामार्थस्त्रिस्त्रिहा ॥ ६ ॥ नपालधर्मनिरुमी
 मरुथाधनरुपिना. कायुवगनावासा. लाकना. धनपालिका ॥ वसन्ति सर्व
 लाकानां दीर्घायु. नागनाभन. धन्यादिधनसंवृद्धि. एवमुसंगलंसदा ॥ का

मासक स्थि र्गता वा वा ^{अथ} ना इह धर्मे च क द नि उ र ह ^अ दीना मद मान रि ग दि त म ध ^ए ला ० समा ॥

तव वरु मघा ^{अथ} रूपा ^{अथ} वनी मदीः नि वृत्या मं म हा सा हं सु रि कं रं वं
धु वं ॥ व द्वा की ज पु दा ग म वा वृ क्षा सर्व स वा व वा सर्व ला का स वृ लि स्ता र व रु
ध र्म सा धि नः ॥ मा शु क स्थि दू वा या वा ^{अथ} वा रू ^{अथ} र्व च कः उ वि डा रू ^अ म
दी ना मद मान रि ग वि दः ॥ सर्व स त्वा समा वा वा य वि शु द्ध रि म लु ला ॥ ऊ ऊ मा
न स्य म म सर्व स त्वा नां ^{आ के र्व त मा} द मा कू नि गृ क २ स्त रि स्ता दा ॥ ॥ [॥] ह य मा व न
रं व कू व वा दि द म दि न ॥ रु व न व स कि द वे ^{अथ} सर्व वि धि द न पु दा ॥ ने मृ कि ^अ म
पु या ना नां य जि ना वे ^अ म द मः ॥ आ दि र्वा दि य हा गं ^{अथ} वा कि का न कू ज नि च ॥ न न

म ३ ला ३ ग मा न म प ३ यो ग दि म वि दि को म

कृ पा य हा म नि नि र्वा धि रु त सं पु दा ॥ उ त्था य ना म हा रा ग म रु न स रु स र वा द य
॥ ऊ ऊ मा न स्य म म सर्व स त्वा नां व सर्व वि शु य म म नू गृ ह दा ष मृ त्वा ^{अथ} म नि स्त
स्ति का मा र्थ न व गृ ह ^{अथ} स्त रि स्त रि ^{अथ} ॥ सर्व षां द व ना नां दि रु ना नां व
दि ने वि र्म ॥ ह न ना ^{अथ} रु म ना य त थ ध र्म न या पि च ॥ ऊ ग ना मि न य सर्व सा
मृ त्वा ना ग म रु वः ॥ वि ग कि का य स्ता रु रु षा वि धु स्ता वि ल सी रु ना ॥ म रु वि
रु ष ना या स सर्व स्त रि क वि य नि ॥ मी ल लि ना यू वि म हा व म म नि ग ला म ना
व म म हा न ग ना म हा धि प नि गी २ ऊ य व स व हा र्द न सा ह व स्य अ र व रु ऊ य

वि सु रि स्ता वा ३ ॥ न न मा न्वा को न रु य ग

यथापरवप्रसिद्धिकामार्थस्वस्तिसाहा ॥ ८॥ वेद्यवत्समीकृत्वाधनमः
 हाववासिनःकनामरुडकस्यममसर्वसत्त्वानांस्वस्तिसाहा ॥ १० ॥
 नजातुकुर्याद्विद्विद्विषायकायनवावाभनसापिवापि सुसादनीयंसह
 सानकृत्वा. तथा नदृष्टिगृह्णन्नननषां. ॐ दंप्रीरुववसंघवत्. नननसस्यन
 ॐ हायानुस्वस्तिसाहा ॥ ११ ॥ वजाचार्यमहाप्राज्ञः अमकनामवजिना. शु
 हरुवकुक्त्वा. सिद्धिबलुधनायस. प्राप्रवक्तिसदासीत्वा. विद्विद्विद्वि
 कामार्थस्वस्तिसाहा ॥ १२ ॥ दानपण्डितमानस्य अमकनामरुडकस्य. राय

उदयान

पुणसद्विगम्या यथाभक्तानिखिलपापकामन. वाञ्छितसंप्राप्तिकामार्थ. दव
 नाचनुवदन्नकनाहृष्टः ॥ मायवन्दा. लक्ष्मिगर्वास्ववृद्धि. आनाग्यंविपुला
 नं. प्राप्ताभिमतसंपूर्ण. यत्सुखंनरुत्तमपद. नसर्वपविवावस्य. निर्दोषादीय
 मायवः ॥ श्रीमन्मूर्ती ॥ अमकदंवनारुहानकस्य. ॐ दमाङ्गनिगृह्ण ॥ स्वस्तिसा
 हा ॥ १२ ॥ धनमूलपूर्णायाय ॥ शु. नापाउसअडवावकय ॥ ऊजमानस्य शु. शु
 यमस्वानांयथाभक्तानिखिलपापकामार्थ ॥ ॐ स्वस्तिवः कृन्तां ॥ १३ ॥ अज्ज
 दीयादीयाविषाविषमहाप्रिय. हवकयवाहनायभक्तिपूर्विकृन्तः ऊजमान

विंश माहनि ३ आकृष्टमयकाय ३ महावात

स्यपूत्रय २ स्रक्लिहाहा ॥ ॥ पूजाकुवि ॥ धनयूग्मवगकाय ॥ ॥ वाक पूजा
दशु विवतिविय ॥ मनुल (धनकं हानककन ॥ गुनपूजा ॥ दक्षिणा निसनाव
॥ दशुसमय ॥ ॥ कृमापन ॥ सकंकाकाय ॥ कलभाहिषक ॥ आशिर्वीद ॥ ॥
धनसपादुनि ॥ ॐ आः हवाशुकहवापनिमिनात्तु ॥ २ ॥ हं हट्टाहा ॥ वृहि
दय ॥ ३ ॥ अननयुधिनायांदि हनेवदिपरावय ॥ माधवाहि किनेरुका रुका
यामिववापनि ॥ वृजागजमहेश्वरः विष्णुवायूमहावत् ॥ कामदवहनि ॥ यैव
यदुहर्षकनयुहा ॥ पृथीपाभयव ॥ यैव कूवन्ननयनसुथा ॥ धर्मवाजाश्वम
ध

याम्य गन्धर्वास्तु वकिन्नवा ॥ जयहिंमनिदवा ॥ अकनिष्टनिवासिनि ॥ महा
वाजाहिनायव ॥ निर्वातवसवर्हिनि ॥ निर्वातवनिदवा ॥ शुद्धावा ॥ आयगमयव
॥ मावजि ॥ आकधकुम्भ ॥ महाधनुनिवासिनि ॥ वरुर्दिपहिनासत्वा ॥ किनायव
किष्ककुका ॥ राजनसत्वाका ॥ लदायुम्भ ॥ मृदिता ॥ मिहिनायव
विमलायायवपावगा ॥ धर्ममद्यानगमयव ॥ इर्जयाजागनायव ॥ इर्गमायाय
अका ॥ पुलाकार्यानिवासिनि ॥ अहिमूर्खिहिनायव ॥ साधुमनिमनायव ॥ दध
हमिध्वना ॥ आर्याष्टमीपूंगवः ॥ संवत् ॥ आवक ॥ यैव ॥ खन्नविधान ॥

पिनः॥ प्रकननकमीर्यश्च दवास्तनमनूयकाः। पीतिताहा मविभनन. न
गभज्जुमभुलं॥ स्वसिजानिरुतानि x ॐ जाः ॥ हं हवा मुक ॥ भाषा इति गृह
२ हं हं हं हं हं ॥ ॥ पूजा मुनि ॥ तर्पण ॥ क मापन ॥ ॥ नोदि द्वाय ॥ मभु
सपानाकल गहाय ॥ ॥ ॥ किमा न्ना इति जह विधि समापं ॥ ॥ ॥
१ सम्वत्सव ॥ २ वेतु मुकु सफ मि. मुकु वा नध क कू वृद्ध वा हा न वा सि क व
जाचार्य गीन न्द सिंद न न स्व ह क न लिखि नं ॥ गुरु मे सु सर्व दा ॥ ॥ ॥

थन महावलि विय ॥ क ता व लि रा व ना । यं का यं स वाय समभु तं नी लं ॥ क इय विनं
का न जा ना मि मभु सं न क । क स्या प वि हं का न रु य सी जा नाः ॥ सु सिका या इय विजा
का न जं व ह न भु लां हा ज रा ज नी । क रु रु का दि प वि पू नि नं । ॐ वं जां जी खं तां मां
पां गां का न जं न द धि सि रं प च्छ म ता प च्छ प दि प नू यं । वा ना रु जि न क लि ना मि
ना य न वि सी य मा क ना दि कं अ हि न व रा नू व रू ड व रू प रू नि लः ॥ क द्वा य प वि न
नं हं का न जं भु क क जं वि ति या म नि रु तं पा न द म ह मं द य मा नं वि रा वा । न इ
प वि ॐ का न जं व द म भु सं वि रा वा क स्या च्छ म भु ला जा नं प क न रू वि न न

सिं ब मा र को व महा वा ॐ कू ठा वा
हिनी फा ह न मा षु र श्री म न्दी ना स धि